Vol. III
Number-2
ISSN 2320-4710
Jan.-Dec. 2014

THOUGHTS ON EDUCATION

A PEER REVIEWED JOURNAL

AN INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION & HUMANITIES

APH PUBLISHING CORPORATION

Scanned by CamScanner

ISSN : 2320-4710

THOUGHTS ON EDUCATION

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

Vol. III, Number - 2 January-December, 2014

Chief Editor

Dr. S. Sabu

Principal, St. Gregorios Teachers' Training College, Meenangadi P.O., Wayanad District, Kerala-673591. E-mail: drssbkm@gmail.com

Co-Editor

S. B. Nangia

A.P.H. Publishing Corporation

4435–36/7, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi-110002

Scanned by CamScanner

CONTENTS

Indian Food Processing Industry: Analytics of Structure, Opportunities and Challenges — 1
J. R. Meena

Widows Across the Ages in Hindu India: An Exploration of their Victimization — 16
Dr. Shweta Singh

Financing of Investment and Liberalization — 26
Alok Dash

Gandhi's Commitment to Moral World View : An Analysis — 34
G.N. Trivedi

Strengthening Ecotourism: Insights from Tourists' Awareness and Willingness to Travel to Eco-Destinations — 40
Garima Gupta, Sonika Nagpal and Pooja Chopra

गोरख के भाव और भाषा का कबीर पर प्रभाव — 49
डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे

Growth and Profitability of Firms — 57
Alok Dash

मीरा : पुरूष दासता से मुक्ति का स्वर — 63
डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे

Study of FDI Inflow in India and Its Forecasting — 68
Mukesh Kumar Jain and Anurag Agnihotri

Human Resource Management a Competitive Advantage in the Era of Globalisation — 80
Dr. Rajeev Vashisht

Size and Growth of Firms — 92
Alok Dash

Study of the Working Capital Management in Manufacturing Firms — 100
Dr. Surender Singh

Guidelines for Contributors — 113

Scanned by CamScanner

गोरख के भाव और भाषा का कबीर पर प्रभाव

डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे*

प्रस्तावना

आज का समय विमर्श का है, विविध विषयों पर नए–नए विमर्श आ गए हैं। इन विमर्शों में दलित, आदिवासी, स्त्री आदि मौलिक विमर्श हैं जिनका आधार है, जन्म के आधार पर (सामाजिक अथवा लैंगिक) असमानता, शोषण, अन्याय की घटनाएँ। जब जीवन के इन धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, पारिवारिक पृष्ठभूमि में अन्याय, शोषण, असमानता का विरोध करना होता है जब ज्यादातर कवि, लेखक या समीक्षक भक्तिकाल के नायक कबीर की तरफ देखते हैं। कबीर विद्रोह के पर्याय हैं। उनकी कविताएँ संदर्भ के रूप में (सशक्त प्रमाण जैसी) उद्धृत की जाती हैं। इसका एक कारण भाषा–शैली की सरलता भी है। लेकिन विद्रोह के संदर्भ में गोरखनाथ के योगदान को रेखांकित ही नहीं किया जाता, शायद इसलिए कि उनकी भाषा शैली हमारी वर्तमान जनभाषा की तुलना में कुछ कठिन जान पड़ती है अथवा हमने उन्हें एक योगी की योग साहित्य के रूप में हाशिए पर ध ाकेल रखा है। जबकि गोरख ने लगभग 40 ग्रंथों की रचना की है जिनमें गलत व्यवस्था के प्रति पर्याप्त विद्रोह है। वे कबीर के पूर्ववर्ती भी हैं। इन अर्थों में गोरख और कबीर की कविताओं का पुनर्पाठ आवश्यक है।

बीजशब्द – नाथ, सिद्ध, सून्य, सगुरा, निगुरा, गगन सिखर, औंधा कुआँ, अमृत, अनहद नाद, उलटबाँसी, गगन गुफा, गोरख, कबीर, भाव, भाषा, महायोगी, सरहपा, शिव, अंध–विश्वास, ऊँच–नीच, समानता।

भारत इस अर्थ में पुण्यभूमि है कि यहाँ समय–समय पर विराट जागृत चेतनाओं का उद्भव और पूर्ण विकास होते रहा है। ये चेतनाएँ सम्बुद्ध होती हैं और बुद्ध को भी प्रबुद्ध और संबुद्ध बनने की प्रेरणा दे सकने में सक्षम होती हैं। अक्सर विपरीत समय–परिस्थितियों में इनका अवतरण देखने को मिलता है। गोरखनाथ भी इसकी परम्परा की एक मजबूत कड़ी के रूप में हमारे सामने आते हैं।

महापुरूषों के जन्म और जीवन के संबंध में अनेक किंवदंतियाँ और चामत्कारिक या मिथकीय कथाएँ प्रचलित हो जाती हैं इसी प्रकार रविदास, कबीर, गुरूघासीदास या गोरखनाथ के संबंध में भी प्रचलित हैं। गोरख महायोगी, हठयोगी और नाथ सम्प्रदाय (परम्परा) के प्रमुख हैं इसलिए इनके साथ अनेक दंत कथाएँ जुड़ जाती हैं। वस्तुतः उनका सम्पूर्ण जीवन प्रयोगधर्मी व लोकहिकारी रहा है परन्तु उनकी छवि सर्वथा विपरीत गढ़ दी गई है।

महायोगी गोरख के जन्म और कार्य अवधि के संबंध में पर्याप्त मत भिन्नताएँ हैं। पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने उन पर काफी काम किया है और 'गोरखबानी' की भूमिका में वे लिखते हैं –''मैं अधिक संभव यह समझता हूँ कि गोरखनाथ विक्रम की 11वीं शती में हुए।'' (1)

डॉ. भगनी शंकर त्रिवेदी गोरख का समय 7वीं शती को मानते हैं डॉ. शहीदुल्ला उन्हें 8वीं शती का मानते हैं। पं. किशोरीदास वाजपेयी, राहुल सांकृत्यायन, डॉ. रांगेय राघव गोरख को 9वी शती का मानते हैं,

*सहायक प्राध्यापक, हिन्दी शास. महाविद्यालय हसौद, जिला-जांजगीर-चांपा (छ.ग.)

Scanned by CamScanner

वहीं डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा आचार्य परशुराम चतुर्वेदी गोरख को 10वी शताब्दी का स्वीकार करते हैं। इसी कड़ी में रामचन्द्र शुक्ल उन्हें 12वीं शती और डॉ. रामकुमार वर्मा उन्हें 13वीं शती का मानते हैं। पर निष्कर्षत उन्हें 10वीं शती का स्वीकार किया गया है। (2) हालांकि अब भी पर्याप्त मतभेद हैं। और इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता कि गोरख कब हुए बल्कि उनका होना तब भी और अब भी प्रासंगिक व मूल्यवान है।

गोरखनाथ अपने शिष्यों, शिक्षाओं और बानियों के द्वारा आज भी सम्पूर्ण भारत, पाकिस्तान, नेपाल, अफगानिस्तान तक फैले हुए हैं। (3) वे अपने युग पर छाए रहे। ऐसे विराट प्रभावशाली व्यक्तित्व देश और काल से परे कालातीत या कालजयी होते हैं। पर व्यवस्था परिवर्तन के विरोधजन, व्यवस्था परिवर्तन के समर्थक जनों को न तो जीते जी पसंद करते और न उनकी मृत्यु के बाद। गोरख को भी इस देख ने भुला देने और मिटा देने की भरपुर कोशिश की है। पर इसमें वे पूर्णतः सफल नहीं हो सके हैं। गोरख कोई राख नहीं हैं, वे दहकते हुए अंगार हैं उनका होना स्वप्रमाणित है उन्हें किसी परिचय या पहचान की जरूरत नहीं। जब गोरख मिटाए नहीं जा सके तो उनकी छवि को गंदला करने की साजिश रची गई लेकिन गोरख आज भी गोरख हैं। वे महान योगी, महान रचनाकार और महान समाज सुधारक हैं।

भारतीय समीक्षकों का एक बड़ा वर्ग गोरख को कवि मानने से ही इंकार करता है। अनेक विद्वानों ने अमीर खुसरों को हिन्दी का पहला कवि स्वीकार किया है। राहुल सांकृत्यायन ने सरहपाद को हिन्दी का प्रथम कवि माना है। डॉ. नगेन्द्र भी सरहपाद को हिन्दी का प्रथम कवि सिद्ध करने की कोशिश की है। इस संबंध में हजारी प्रसाद द्विवेदी ने गोरखनाथ की भाषा का विस्तार से विवेचना करते हुए गोरखनाथ को हिन्दी का प्रथम कवि निर्धारित किया है। (4) चाहे वे प्रथम कवि हों या न हों पर उनकी एक दर्जन से अधिक कृतियाँ जो प्रामाणिक रूप से संकलित और संपादित की गई हैं वे हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

गोरख का संबंध सिद्ध और नाथ परंपरा से है। वे नाथ परंपरा के प्रवर्तक हैं। बौद्ध सिद्धों की तांत्रिक, वाममार्गी, काम एवं स्त्री प्रधान साधनाओं से भक्ति (साधना) का मार्ग विकृत हो चुका था। ऐसे समय में गोरख पुरानी परंपराओं को ध्वस्त करते हुए वामाचार और पंचमकार के स्थान पर सात्विक साधना को स्थापित करते हैं यह अत्यंत साहस व विद्रोह का कार्य था। तांत्रिक साधनाओं के कारण स्त्री समाज विशेष रूप से त्रस्त था। गोरख ने नारी जगत को माता मान लिया, अश्लील और वीभतस विधानों को इन्होंने साधना से अलग किया और सात्विक साधना का प्रावधान किया। (5)

गोरखनाथ के साहित्य को नाथ साहित्य के अंतर्गत रखा जाता है रामचंद्र शुक्ल जैसे पूर्वाग्रही समीक्षक इनकी रचनाओं को साम्प्रदायिक कहकर किनारे कर देते हैं। जबकि इनके समग्र मूल्यांकन की आवश्यकता है। गोरखनाथ की रचनाएँ संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और मध्यकालीन हिन्दी में मिलती हैं। (6) गोरख की पहुँच अनेक क्षेत्रों और अनेक भाषाओं तक है।

गोरख, मत्स्येन्द्रनाथ के प्रमुख शिष्य थे। गोरख की रचना का मूल स्वर है – नाथ साधना (परंपरा) की स्थापना। योग साधना द्वारा मोक्ष को प्राप्त करना नाथ सम्प्रदाय का प्रमुख उद्देश्य था। मंत्र व तंत्र के साथ–साथ हठयोग की साधना इनकी प्रमुख देन है।

नाथ सम्प्रदाय ने जन्म से श्रेष्ठता को स्वीकृति नहीं दी जिससे ऊँच–नीच की व्यवस्था लड़खड़ाने लगी। बिना भेदभाव के इन्होंने प्रत्येक मनुष्य को मोक्ष प्राप्ति के लिए साधना की दिशा में प्रेरित किया, गुरू को

Scanned by CamScanner

महत्व दिया, संसार से पलायन के बजाय संयम के साथ जीवन जीने का उपदेश दिया। भोग के स्थान पर ब्रम्हचर्य को स्थापित किया। इस मार्ग में बाह्य आडम्बरों, तीर्थाटन, शास्त्रज्ञान, माँस–मदिरा सेवन, मूर्तिपूजा आदि का विरोध कर, सात्विक साधना आचरण की शुद्धता, शाकाहार, सहज जीवन पर जोर दिया गया जो कि उस समय की शोषण व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन का मार्ग था। लोग मूर्ति में ईश्वर ढूंढ रहे थे, पर गोरख ने ब्रम्ह का स्थान काया (शरीर) को ही बताया। (7) उन्होंने हँसते–खेलते सहज रूप से ध्यान साधना करने की बात कही – "हँसिबा, खेलिबा, धरिबा ध्यानं" का मार्ग सुझाया। यही बातें आगे कबीर में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।

गोरख को इसलिए भी धन्यवाद दिया जाना चाहिए कि उस समय हिन्दी निर्माणाधीन थी और देवभाषा व शास्त्र भाषाओं को छोड़कर उन्होंने अपने उपदेशों के लिए हिन्दी को चुना। (8) आगे चलगर कबीर ने भी अपनी बातों के लिए अपने समय की उस मिश्रित लोकभाषा को चुना जिसे सर्वाधिक जनता समझती थी।

गोरख का साहित्य कबीर की पृष्ठभूमि बनकर सामने आता है। कबीर ने जिन वाणियों को प्रखरता के साथ उठाया है उन वाणियों की भूमि और भाव–बीज बहुत पहले गोरख ही तैयार करके जा चुके थे। ऐसा लगता है मानो कबीर गोरख के उत्तराधिकारी हैं। न केवल कबीर बल्कि भक्तिकाल की कोई भी धारा गोरख से अस्पर्शित नहीं रही। कबीर हिन्दू मुस्लिम दोनों पर समान चोट करते हैं यह कार्य भी गोरख अपने समय कर चुके हैं, वे मुसलमानों की हिंसात्क वृत्ति पर चोट करते हैं। (9) गोरख के समय यह कार्य तो किसी आश्चर्य से कम नहीं। इस अर्थ में समझना होगा कि कबीर को खंडन–मंडन की इतनी ताकत अवश्य ही गोरख से मिली होगी।

गोरख बाह्याचारों का खंडन करते हैं। सिद्ध साहित्य भी बाह्याचारों का खंडन करते हुए कहता है कि यदि नग्न रहने से मुक्ति मिल जाती तो कुत्ते और सियार भी मोक्ष पा गए होते –

जहणग्गाविअ होई मुक्ति, ता सुणह सियालह

इसी तरह गोरखबानी कहती है कि दुग्धाहारी का मन सदा दूसरों के घर पड़ा रहता है (कि दूध कब मिले), नागा साधू अपने शरीर को गरम रखने के लिए लकड़ियों की चिंता में लगा रहता है और मौनी को हमेशा एक साथी की जरूरत होती है, ऐसे बाह्याचार से ईश्वर प्राप्ति नहीं होती –

दूधाधारी पर घरि चित्त, नागा लकड़ी चाहै नित्त
मौनी कसै मयंत्र की आस, बिनु गुय गुदड़ी नहीं बेसास

कबीर तक आते–आते बाह्याचार का खंडन और अधिक धारदार हो जाता है, वे कहते हैं –

मूड़ मुड़ाए हरि मिले, तो सब कोई लेत मुड़ाय
बार–बार के मूंड़ते, भेड़ न बैकुंठ जाय

यही नहीं कबीर आगे कहते हैं –

पाद्धन पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजूँ पहार
याते तो चक्की भली, पीस खास संसार

गोरख कह रहे हैं कि केवल दूध को आहार के रूप में लेने, नग्न रहने अथवा मौन रहने मात्र से परमात्मा को नही पाया जा सकता और कबीर भी यही कह रहे हैं कि सिर मुड़ा लेने या पत्थर की पूजा करने से परमात्मा नहीं मिल सकता।

Scanned by CamScanner

गोरख 10वीं शताब्दी और कबीर 15वीं शताब्दी के माने गए है इनके बीच कालखण्ड की एक दूरी है लंबा अंतराल है, पर विचारधारा का बहाव बिल्कुल सतत है, निरंतर है। लगता है कबीर जैसा बड़ा विद्रोही कवि भी गोरख से प्रेरणा ले रहा है।

गोरख योग साधना में मन रूपी मछली को पहाड़ पर चढ़ा देने की बात कहते हैं और पानी में आग लगने बात करते हैं –

"डूंगरी मंछा जलि सुसा पांणी मे दौं लागा" (10)

यही भाव कबीर की इन पंक्तियों में दिखाई पड़ता है –

"समंदर लागि आगि, नदिया जल कोइला भइ
देखि कबीरा जागि, मंछी रूखाँ चढ़ि गई" (11)

नाथपंथी दार्शनिक सिद्धांत देते हुए गोरख कहते हैं –

"वसति न सून्यं सून्यं न वसति, अगम अगोचर ऐसा।
ग्गन शिखर में बालक बोलै, ताका नाव धरउगे कैसा।।"

उसी निर्गुण निराकार ईश्वर के रहस्यमय दार्शनिक सिद्धांत को आगे बढ़ातें हुए कबीर कहते हैं–

"सरीर सरोवर भीतर, आछे कमल अनूप।
परम ज्योति पुरूषोत्तम, जाके देह न रूप ।।"

गोरख गगनमंडल, कुएँ और अमृत की बात करते हैं –

"गगन मंडल में औंधा कुआं, तहं अमृत का वासा।
सगुरा होय ते झर झर पिया, निगुरा जाहि पियासा।।"

ठीक यही बात कबीर भी कहते हैं –

"आकासेमुखि औंधा कुआँ, पाताले पनिहारी
तका पांणि को हंसा पिवै, बिरला आदि विचारि"

छोनों के अनुभव और सिद्धांत ही नहीं बल्कि शब्दों में भी गजब की समानता है। भावपक्ष और कलापक्ष दोनों की समान रूप से प्रवाहित होती जान पड़ती हैं।

इंगला पिंगला के उदाहरण इनकी रचनाओं में इस प्रकार हैं –

गोरख – "सदा अभ्यास रहै जोगी गंगा जमुना कूले
गंगा जमुना कूले पैसि करिले असनान" (गोरखबानी)

कबीर – "गंग जमुन उर अंतरै, सहज सुनि लौ घाट
तहाँ कबीरा मठ रच्या, मुनिजन जोवै बाट" (कबीर ग्रंथावली)

दोनों में गंगा–जमुना (इड़ा–पिंगला) और सहज (घाट) की चर्चा बिल्कुल एक समान है।

गोरख ने वेद किताब शास्त्र के ज्ञान को गौण माना है –

"वेदे न सास्त्रे कतेबे न कुरांणे पुस्तके न बंच्या जाई।
ते पद जांनां बिरला जोगी और दुनी सब धंधै लाई।।" (12)

उसी प्रकार कबीर भी शास्त्रीय ज्ञान की उपेक्षा करते हुए कहते हैं –

Scanned by CamScanner

"पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ, पंड़ित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंड़ित होय।।"

दोनों का मार्ग शास्त्र ज्ञान से हटकर आत्मज्ञान की ओर जाता है। अपने शिष्यों को गोरख अवधूत पुकारते हैं वही कबीर भी 'अवधू' था 'साधो' का संबोधन प्रयोग करते हैं। गोरख ध्यान को सहज बनाना चाहते हैं, उनका संदेश है – हँसिबा, खेलिबा, धरिबा ध्यानं, वही दूसरी ओर कबीर भी सहज साधना पर जोर देते हुए कहते हैं – 'संतों सहज समाधि भली'।

गोरख काम, क्रोध से बचने की सलाह देते हैं –
हँसिबा, खेलिबा, रहिबा रंग, काम क्रोध न करबा संग।
उसी प्रकार कबीर भी काम, क्रोध, लोभ से बचने को कहते हैं –
'कामी, क्रोधी, लालची, इनसे भक्ति न होय।'

गोरख कहते हैं कि ज्ञान हीरे (मणि) के समान है, जिसे प्राप्त हो गया उसे सम्हालकर और छिपाकर रखना चाहिए –

"मानिक पाया फेरि लुकाया झूठा वाद विवादं"
इसी को कबीर भी चेताते हुए कहते हैं –
"हीरा पायो गाँठ गठियायो, बार बार वाके क्यों खोले"
मन मस्त हुआ तब क्यों बोले। (13)
राह से भटके हुए हिन्दु मुसलमान दोनों को गोरख फटकारते हैं –
"हिन्दू आषै राम को मूसलमान षुदाई
जोगी आषै अलष को तहाँ राम अछे न षुदाई"
कबीर तक आते–आते यह फटकार और तीव्रता से गूंजित हो उठता है –
"अरे इन दोहुन राह न पाई ...
हिंदुन की हिंदुवाई देखी, तुरकान की तुरकाई" (14)
गोरख अरध–उरध बाजार की चर्चा करते हैं –
"अवधू सेसा नग्र हमारा तिहां जोवो ऊजू द्वारं।
अरधू उरध बाजार मड्या है गोरख कहै बिचारं।।"
कबीर भी आपने काव्य में ठीक यही बात कहते दीखते हैं –
"चौसर माड़ि चौहरे अरध उरध बाजार।
कहै कबीरा रामजन खेलौ संत विचार।।"

दोनों का संदेश एक जैसी भाव धारा से प्रवाहित हो रहा है। दोनों ने नाम स्मरण व अजपा जाप की महिमा गाई है। गोरख कहते हैं –

"ऐसा जाप जपौ मन लाई, सोहं सोहं अजपा गाई"
इसी तरह कबीर 'कर का मनका टार दै, मन का मनका फेर'
कहते हुए कहते हैं – "सहजो सुमिरन कीजिए, हिरदै माहि छिपाई।।"

Scanned by CamScanner

इसी तरह कबीर मूर्तिपूजा, तीर्थस्थान आदि का जो विरोध करते हैं वह गोरख की कविताओं में भी मुखरित हो चुका है। वे कहते हैं तु सजीव होकर कैसे निर्जीव की पूजा करते हो और तीर्थों में स्नान कर लेने से तुम्हारा अंतस कैसे निर्मल हो जाएगा –

"पषांण ची देवली पषांण चा देव
पषांण पूजिला कैसे फटीला सनेह।"
"तीरथि तीरथि सनांन करीला
बहर धोये कैसे भीतरि भेदीला।"

गोरख गुरू की महत्ता को स्वीकारते हैं। वे कहते है सतगुरू मिलता है तभी जीवन का उद्धार होता है, अन्यथा जीवन व्यर्थ है, गुरू का उपदेश मिलते ही सारी शंकाएँ तिराहित हो जाती हैं।

"सतगुरू मिलै तो ऊबरै बाबू नही तो परलै हुआ।"
"कथंव गोरषनाथ गुरू उपदेसा। मिल्या संतजन टल्या अंदेशा।।"

इसी प्रकार कबीर भी कहते हैं – सतगुरू ने बांह पकड़ कर पार लगा दिया अन्यथा हम तो डूब रहे थे। गुरू अंनत का दिखावणहार है उवकी महिमा अनंत है इसीलिए कबीर गुरू को गोविंद से पहले रखते हैं –

'सतगुरू की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार।
लेचन अनंत उघाड़िया अनंत दिखावणहार।।'
"गुरू गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियो लखाय।।"

गोरख के काव्य में उलट बांसी और प्रतीकों की जैसी चर्चा है बिल्कुल वैसी ही चर्चा कबीर के काव्य में भी हैं। गोरख कहते हैं –

"नाथ बोलै अमृत बांणी, बरिषैगी कंबली भीजैगा पांणी
गाड़ि पड़रवा बांधि लै षूंटा, चलै दमांमां बाजिलै ऊंटा
कउवा की डाली पीपर बासै, मूसा के सबद बिलइया नासै
चलै बटावा थाकी बाट, सोवै डुकरिया ठोरै षाट
ढूकिले कूकर भूकिले चोर काढ़ै धणी पुकारे ढोर
मगीर परि चूल्हा धूँ धाई, पोवणहारा को रोटी पाई
कामिनी जलै अँगीठी तापै, बिचि वैसंदर थर हर कांपै।" (15)

जान पड़ता है कि गोरख की उलटवांसी प्रयोगों से प्रभावित होकर कबीर में भी उसका सार्थक प्रयोग किया है। उदाहरण देखिए –

एक अचम्भा देखा रे भाई, ठाड़ा सिंह चरावै गाई।
पहले पूत पीछे भई माई, चेला के गुर लागै पाई।।
पहिले भई बहिनें, फिर भये भइया।
भइया ऊपर बप्पा भये, फिर भई अइया।।
बैल बियाई गाइ भई बांझ, बछरा दूहे तीन्यूं सांझ

Scanned by CamScanner

मकड़ी घरी माषि छछिहारी, मास पसारि चील्ह रखवारी
मुसा खेवट नाव बिलइया, मीडंक सोवै सांप परहइया
निति उठि स्याल स्यंघ सूं झूझै, कहै कबीर सोइ बिरला बूझै।। (16)

इसके अलावा उलटबांसी के अनेक भावसाम्य उदारहण भी दि जा सकते हैं।

गोरख जीते जी मरने की कला सिखाना चाहते हैं, शायद यह निर्विचार समाधि की अवस्था है। वे कहते है –

"मरौ हे जोगी मरौ, मरौ मरन है मीठा
तिस मरनी मरो है जोगी, जिस भरनी गोरख मरि दीठा।"

कबीर भी ऐसी मृत्यु की बात करते हैं जहाँ बार–बार के जन्म–मृत्यु से छुटकारा मिल जाता है –

"मरता मरता जग मूवा, औसर मुवा न कोइ
कबीर ऐसै मरि मुवा, ज्यूं बहुरि न मरना होइ" (17)

दोनों के अनुभव, सिद्धान्त और निर्गुण दर्शन समान रूप से एक ही दिशा और गंतव्य की ओर बढ़ते दिखाई देते हैं।

ये तो कुछ प्रमाण अथवा उदाहरण मात्र हैं। इनके अलावा योग की साधना पद्धति, विधियाँ, नाम, शब्द, सुमिरन, स्वांसा (अजपा) जाप, अनहद नाद, ज्योति प्रकाश, शून्य की अवस्था, आकास, अमृत, कुंडलिनी, इंगला–पिंगला, सुसुम्ना, माया, पतिव्रता स्त्री के प्रति आदर भाव, आचरण की शुद्धता, हिन्दू–मुसलमान एकता, पाखंड का विरोध, वेद शास्त्र की अस्वीकृति, आसन, प्राणायाम, जातिवाद से ऊपर उठकर मानवता की भावना, प्रतीक, रूपक, दृष्टान्त आदि की दृष्टि से भी कबीर गोरख के अनुगामी प्रतीत होते हैं। साखी (दोहा), सबद (पद), राग–रागिनी, फुटकर छन्दों के प्रयोग, आलंकारिक शैली, चमत्कारपूर्ण लोक भाषा का प्रयोग कबीर ने गोरख से ही लिया है। कबीर के काव्य में कतिपय स्थानों पर गोरख का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। इससे यह स्पष्ट है कि कबीर भी महायोगी गोरख को जानते, मानते, स्वीकारते थे।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि देशकाल की सीमाएँ शरीर को बाँध सकती हैं पर चेतना की अविरल धारा का प्रवाह जब हृदय (अंतस) की गहराई से अनुभव के रूप में फूटता है तब नदी की तरह अपना मार्ग बनाते हुए समंदर से जा मिलता है। ऐसे ही गोरख से निकलती निर्गुण भक्ति की अविरल धारा कबीर से होते हुए मध्यकाल के अनेक संतो के माध्यम से ब्रम्ह स्वरूप लोक सागर तक पहुँच ही जाती है। गोरख का प्रभाव परवर्ती साधकों व साहित्यकारों में पर्याप्त रूप से दिखाई पड़ता है। 20वीं शदी के महान संत व दार्शनिक ओशो रजनीश ने भी गोरख को भारत का अनमोल धरोहर माना है। कृष्ण, पतंजलि, बुद्ध और गोरख इन चारों को अध्यात्म के चार स्तंभ (चार दिशाएँ) कहा है। अध्यात्म के क्षेत्र में ओशो गोरख को कबीर से भी महत्वपूर्ण मानते हैं। मध्यकाल के सारे संत कबीर में लीन हो जाते हैं पर ओशो मानते है कि कबीर का व्यक्तित्व गोरख में लीन हो सकता है, गोरख का पुरूष व्यक्तित्व कबीर है और स्त्री व्यक्तित्व मीरा। ये गोरख से उपजते हैं और उसी में समा सकते हैं। पर गोरख की घोर उपेक्षा हुई है। वे परमयोगी, कवि व समाज सुधारक हैं। गोरख के व्यक्तित्व, भाव एवं भाषा का पर्याप्त प्रभाव कबीर पर दिखाई देता है जो आगे चलकर निर्गुण संतो के माध्यम से जनमानस तक पहुँचता है। वे आज भी प्रासंगिक हैं।

Scanned by CamScanner

सन्दर्भ सूची

1 सिंह, डॉ. कमला. *गोरखनाथ और उनका हिन्दी साहित्य*, कुसुम प्रकाशन मुजफ्फरनगर, 1990, पृष्ठ 22
2 वही, पृष्ठ 2–4
3 वही, पृष्ठ 1
4 वही, पृष्ठ 17
5 सिंह, डॉ. अनुज प्रताप. *नाथ सिद्धों का तात्विक विवेचन*, महायोगी गुरू गोरक्षनाथ शोध संस्थान गोरक्षनाथ मंदिर गोरखपुर, सं. 2071 वि., पृष्ठ 84
6 वही, पृष्ठ 84
7 वही, पृष्ठ 96–97
8 वही, पृष्ठ 97
9 वही, पृष्ठ 97
10 सिंह, डॉ. कमला. *गोरखनाथ और उनका हिन्दी साहित्य*, कुसुम प्रकाशन मुजफ्फरनगर, 1990, पृष्ठ 129
11 वही, पृष्ठ 129
12 वही, पृष्ठ 152
13 द्विवेदी, आचार्य हजारी प्रसाद. *कबीर*, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ 199
14 वही, पृष्ठ 152
15 सिंह, डॉ. कमला. *गोरखनाथ और उनका हिन्दी साहित्य*, कुसुम प्रकाशन मुजफ्फरनगर, 1990, पृष्ठ 71
16 बाठ, डॉ. सुखविन्दर कौर. *कबीर का लोकतात्विक चिंतन*, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, 2007, पृष्ठ 167–169
17 वही, पृष्ठ 46

Scanned by CamScanner